७. छोटा जादूगर

– जयशंकर प्रसाद

श्रवणीय

प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी सुनिए और प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● प्रेमचंद की कुछ कहानियों के नाम पूछें । ● प्रेमचंद जी का जीवन परिचय बताएँ । ● कहानी के मुख्य पात्रों के नाम श्यामपट्ट पर लिखवाएँ । ● कहानी की भावपूर्ण घटना कहलवाएँ । ● कहानी से प्राप्त सीख बताने के लिए प्रेरित करें ।

कॉर्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था । मैं खड़ा था । उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ । उसके अभाव में भी संपूर्णता थी । मैंने पूछा–''क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?''

''मैंने सब देखा है । यहाँ चूड़ी फेंकते हैं । खिलौनों पर निशाना लगाते हैं । तीर से नंबर छेदते हैं । मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ । जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है । उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ, टिकट लगता है ।''

मैंने कहा–''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ ।'' मैंने मन-ही--मन कहा–'भाई ! आज के तुम्हीं मित्र रहे ।'

उसने कहा–''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा ? चलिए, निशाना लगाया जाए ।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा–''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए ।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया ।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गरम हो रही थी । हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले । रास्ते में ही उससे पूछा– ''तुम्हारे और कौन हैं ?''

''माँ और बाबू जी ।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया ?'' ''बाबू जी जेल में हैं ।''

'' क्यों ?''

'' देश के लिए ।'' वह गर्व से बोला ।

'' और तुम्हारी माँ ?''

'' वह बीमार हैं ।''

'' और तुम तमाशा देख रहे हो ?''

परिचय

जन्म : ३० जनवरी १८८९ वाराणसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** १५ नवंबर १९३७ वाराणसी (उ.प्र.)

परिचय : जयशंकर प्रसाद जी हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद जी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : झरना, आँसू, लहर आदि (काव्य) कामायनी (महाकाव्य), स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (ऐतिहासिक नाटक), प्रतिध्वनि, आकाशदीप, इंद्रजाल आदि (कहानी संग्रह), कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास) ।

गद्य संबंधी

संवादात्मक कहानी : किसी विशेष घटना की रोचक ढंग से संवाद रूप में प्रस्तुति संवादात्मक कहानी कहलाती है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने लड़के के जीवन संघर्ष और चातुर्यपूर्ण साहस को उजागर किया है ।

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा–''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ । कुछ पैसा ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती ।''

मैं आश्चर्य में उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा ।

'' हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबू जी ! माँ जी बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया ।''

'' कहाँ ?''

'' जेल में । जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया । चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे । मन व्यग्र हो उठा । मैंने उससे कहा –''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए ।'' हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था । मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए ।

वह निकला पक्का निशानेबाज । उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई । देखने वाले दंग रह गए । उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे ? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिए गए ।

लड़के ने कहा–''बाबू जी, आपको तमाशा दिखाऊँगा । बाहर आइए, मैं चलता हूँ ।'' वह नौ–दो ग्यारह हो गया । मैंने मन–ही–मन कहा–''इतनी जल्दी आँख बदल गई ।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया । पान खाकर बड़ी देर तक इधर–उधर टहलता देखता रहा । झूले के पास लोगों का ऊपर–नीचे आना देखने लगा । अकस्मात किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा–''बाबू जी !''
मैंने पूछा–''कौन ?''
''मैं हूँ छोटा जादूगर ।''

: २ :

कोलकाता के सुरम्य बोटैनिकल उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी मनोहर झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था । बातें हो रही थीं । इतने में वही छोटा जादूगार दिखाई पड़ा । हाथ में चारखाने की खादी का झोला । साफ जांघिया और आधी बाँहों का कुरता । सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी में बंधा हुआ था । मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा –''बाबू जी नमस्ते ! आज कहिए, तो खेल दिखाऊँ ।''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं ।''

''फिर इसके बाद क्या गाना–बजाना होगा, बाबू जी ?''

मौलिक सृजन

'माँ' विषय पर स्वरचित कविता प्रस्तुत कीजिए ।

आसपास

अपने विद्यालय के किसी समारोह का सूत्र संचालन कीजिए ।

''नहीं जी-तुमको...,'' क्रोध से मैं कुछ और कहने जा रहा था, श्रीमती ने कहा-''दिखाओ जी, तुम तो अच्छे आए । भला, कुछ मन तो बहले ।'' मैं चुप हो गया क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता । उसने खेल आरंभ किया । उस दिन कॉर्निवाल के सब खिलौने खेल में अपना अभिनय करने लगे । भालू मनाने लगा । बिल्ली रूठने लगी । बंदर घुड़कने लगा । गुड़िया का ब्याह हुआ । गुड्डा वर सयाना निकला । लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था । सब हँसते-हँसते लोटपोट हो गए ।

मैं सोच रहा था 'बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया । यही तो संसार है ।'

ताश के सब पत्ते लाल हो गए । फिर सब काले हो गए । गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुट गई । लट्टू अपने से नाच रहे थे । मैंने कहा-''अब हो चुका । अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे ।'' श्रीमती ने धीरे-से उसे एक रुपया दे दिया । वह उछल उठा । मैंने कहा-''लड़के ।'' ''छोटा जादूगर कहिए । यही मेरा नाम है । इसी से मेरी जीविका है ।'' मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा-''अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे ?'' ''पहले भर पेट पकौड़ी खाऊँगा । फिर एक सूती कंबल लूँगा ।'' मेरा क्रोध अब लौट आया । मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा-'ओह ! मैं कितना स्वार्थी हूँ । उसके एक रुपये पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था ।' वह नमस्कार करके चला गया । हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले ।

: ३ :

उस छोटे-से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी । एक शांत वातावरण था । हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर जा रहे थे । रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था । सचमुच वह झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था । मैंने मोटर रोककर उससे पूछा-''तुम यहाँ कहाँ ?'' ''मेरी माँ यहीं हैं न ? अब उसे अस्पतालवालों ने निकाल दिया है ।'' मैं उतर गया । उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों में लदी हुई काँप रही थी । छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा-''माँ !'' मेरी आँखों में आँसू निकल पड़े ।

: ४ :

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी । मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था । कोलकाता से मन ऊब गया था । फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई । साथ-ही-साथ जादूगर भी

पुस्तकालय/ अंतरजाल से उषा प्रियंवदा जी की 'वापसी' कहानी पढ़िए और सारांश सुनाइए ।

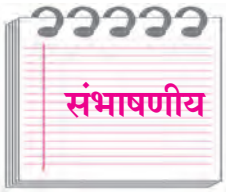

माँ के लिए छोटे जादूगर के किए हुए प्रयास बताइए ।

दिखाई पड़ जाता, तो और भी ... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा । जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था । मोटर रोककर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी । भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी, सब होते हुए भी जादूगार की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था । मानो उसके रोयें रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया । मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा - '' आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा है आज तुरंत चले आना । मेरी घड़ी समीप है ।'' अविचल भाव से उसने कहा । ''तब भी तुम खेल दिखाने चले आए ।'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । मनुष्य के सुख-दुख का माप अपना ही साधन तो है । उसी के अनुपात से वह तुलना करता है ।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी । उसने कहा- ''क्यों न आता ?'' और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था ।

क्षण-क्षण में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई । उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा-''जल्दी चलो ।'' मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा ।

मैं कुछ ही मिनटों में झोंपड़े के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोंपड़े में 'माँ-माँ' पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से, 'बे...' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर गिरे । जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्द संसार

विषाद (पुं.सं.) = दुख, जड़ता निश्चेष्टता
हिंडोले/हिंडोला (पुं.सं.) = झूला
जलपान (पुं.सं.) = नाश्ता
घुड़कना (क्रि.) = डाँटना
वाचालता (भाव.सं.स्त्री.) = अधिक बोलना
जीविका (स्त्री.सं.) = रोजी-रोटी
ईर्ष्या (स्त्री.सं.) = द्वेष, जलन
चिथड़ा (पुं.सं.) = फटा पुराना कपड़ा
चेष्टा (सं. स्त्री.) = प्रयत्न
समीप (क्रि.वि.) (सं.) = पास निकट, नजदीक
अनुपात (पुं.सं.) = प्रमाण, तुलनात्मक स्थिति
समग्र (वि.) = संपूर्ण

मुहावरे

दंग रहना = चकित होना
मन ऊब जाना = उकता जाना

पाठ के आँगन में

Acharya Jagadish Chandra Bose Indian Botanic Garden – Wikipedia

मैं हूँ यहाँ

(१) विधानों को सही करके लिखिए :–

(क) ताश के सब पत्ते पीले हो गए थे ।

(ख) खेल हो जाने पर चीजें बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा ।।

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :

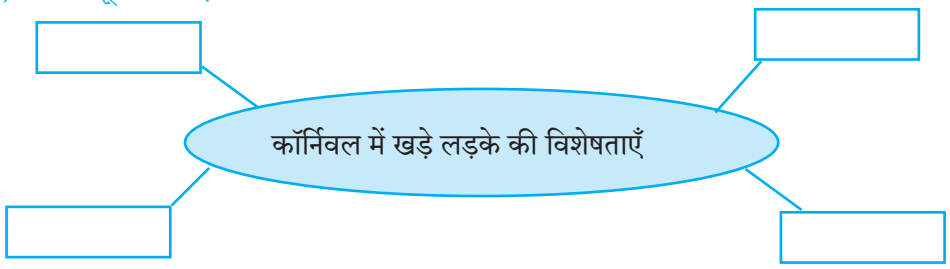

(३) छोटा जादूगर कहानी में आए पात्र :

(४) 'पात्र' शब्द के दो अर्थ : (क) ..... (ख) .....

पाठ से आगे

सियारामशरण गुप्त जी द्वारा लिखित 'काकी' पाठ के भावपूर्ण प्रसंग को शब्दांकित कीजिए ।

भाषा बिंदु

रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय शब्दों से कीजिए और नया वाक्य बनाइए :

१. जहाँ एक लड़का ——— देख रहा था । .....

२. मैं उसकी ——— न जाने क्यों आकर्षित हुआ । .....

३. ——— ! मैं सच कहता हूँ बाबू जी । .....

४. ——— किसी ने ——— के हिंडोले से पुकारा। .....

५. मैं ——— बुलाए भी कहीं जा पहुँचता हूँ । .....

६. लेखकों ——— वक्ताओं की न जाने क्या दुर्दशा होती । .....

७. ———! क्या बात । .....

८. वह बाजार गया ——— उसे किताब खरीदनी थी । .....

रचना बोध

.....

.....

.....